आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 17-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को हर रोज ज्ञान और योग की खुराक खिलाकर खुशियों के खजाने से भरपूर करने वाले, बेहद के रुहानी सर्जन-बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप तुम्हें ज्ञान योग की खुराक खिलाकर जबरदस्त खातिरी करते हैं, तो सदैव खुश मौज में रहो और श्रीमत् अनुसार सबकी खातिरी करते चलो.

बाबा की मुरलीओं से हमें हर रोज ज्ञान और योग के खुशी के खजाने मिलते है. हमारे मन में है कि स्वयं परमात्मा हमारी बाप बनकर पालना करता है और स्वर्ग का २१ जन्मो का वर्सा देते है, टीचर बनकर हमें ज्ञान और योग सिखलाते है और सतगुरु बनकर हमारी आत्मा को गुणों और शक्तिओं से श्रृंगार करते है, श्रेष्ठ बनने की श्रीमत् देते है और फिर अपने साथ भी ले जायेंगे शांतिधाम. बाबा की मुरली सुनते-सुनते हमारा मुखारविंद पर एक अलौकिक मुस्कुराहट आती है, मन अतिन्द्रिय सुख से भर जाता है और आंखों में स्नेह के आंसू भी आ जाते हैं. सच में हमारे पर ही शास्त्रों में गायन है कि अतिन्द्रिय सुख पुछना हो तो गोप-गोपिओं से पुछो.

बाबा की आज की मुरली से आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र पर कहे गये महा-वाक्यों को स्वयं परमात्मा मुझे ही कह रहा है इस अवस्था में रहकर पढ़ेंगे.

आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र पर कहे गये महा-वाक्यों --

- बाबा कहते हैं सारे कल्प में ज्ञान का तीसरा नेत्र एक बाप के सिवाय और कोई नहीं दे सकता. अभी तुम बच्चों को बाप से ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है, जिसे तुम सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो.

- बाबा कहते हैं सारे ज्ञान का एक ही अक्षर है मनमनाभव. यह कितना मीठा अक्षर है. अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो. बाप ही आकर तुम्हें शांतिधाम और सुखधाम का रास्ता बताते हैं. बाप बच्चों को स्वर्ग का वर्सा देने आये हैं. तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए.

- बाबा कहते हैं मीठे बच्चे जानते हैं बेहद के बाप द्वारा हमको जीवनमुक्ति की सौगात मिलती है. सतयुग में भारत जीवनमुक्त था, पावन था. बाप तुम बच्चों को बड़ी ऊंची खुराक देते है तब तो गायन है अतिन्द्रिय सुख पुछना हो तो गोप-गोपियों से पुछो.

- बाबा कहते हैं मीठे बच्चों तुम्हारे लिए हथेली पर सौगात लेकर आया हूँ. मुक्ति और जीवनमुक्ति की यह सौगात मेरे पास ही रहती है. यह सुनने से तुम्हें कितनी खुशी होती हैं.

तुम जानते हो हमारा एक ही बाप, टीचर और सच्चा सतगुरु है जो हमें साथ ले जाते हैं. मोस्ट बिलवेड बाप से बच्चों को विश्व की बादशाही मिल रही है – यह कम बात है क्या! बच्चों को सदैव हर्षित रहना चाहिए.

- बाबा कहते हैं बाप तुम बच्चों को कितना सहज रास्ता बताते हैं. ग्रहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहो. धन्धा धोरी आदि करते भी मुझे याद करते रहो. जैसे आशिक मासूक को याद करते हैं. तुम भी मेरे जन्म-जन्मांतर के आशिक हो.

- बाबा कहते हैं मीठे बच्चे - देही-अभिमानी बनो. अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो और साथ-साथ दैवी-गुण भी धारण करो तो तुम ऐसे लक्ष्मी-नारायण जैसे बन जायेंगे. ऊंच ते ऊंच बाप को बहुत प्यार, स्नेह से याद करना चाहिए.

- बाबा कहते हैं मैं आया हूँ तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाने इसलिए मुझे याद करो तो तुम्हारे अनेक जन्मो के पाप कट जायेंगे. पतित-पावन बाप कहते हैं तुम बहुत पतित बन गये हो इसलिए अब तुम मुझे याद करो तो तुम पावन बन पावन दुनिया का मालिक बन जायेंगे.

- बाबा कहते हैं बाबा ही दुखहर्ता सुखकर्ता है. बरोबर सतयुग में पावन दुनिया थी तो सब सुखी थे. अभी बाप फिर कहते है बच्चे शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो. अभी है संगमयुग. बाप खेवैया बन तुम्हें इस पार से उस पार ले जा रहे हैं.

- बाबा कहते हैं मैं आत्माओं को ही देखता हूँ. बाकी यह तो ज्ञान है कि आत्मा शरीर बिगर बोल नहीं सकती. मैं भी इस शरीर में आया हूँ, लोन लिया हुआ है. शरीर के साथ ही आत्मा पढ सकती हैं. बाबा की बैठक यहाँ भ्रकुटी में हैं. यह है अकाल तख्त. आत्मा अकालमूर्त है. आत्मा कब छोटी बड़ी नहीं होती है. शरीर छोटा बड़ा होता है. जो भी आत्मायें है उन सभी का तख्त यह भ्रकुटी है. शरीर सभी का भिन्न-भिन्न होता है. किसका अकाल तख्त पुरुष का है, किसका अकाल तख्त स्त्री का है और किसका अकाल तख्त बच्चे का हैं. बाप ही तुम्हें यह ड्रिल सिखलाते है जब किसी से बात करो पहले अपने को आत्मा समझो और फिर हम फलाने आत्मा भाई से बात करते है. यह ड्रिल ही तुम्हें आत्म-अभिमानी बना देगी.

ॐ शांति.